लक्ष्य गीत — राष्ट्रीय सेवा योजना

उठे समाज के लिए उठें—उठें
जगें स्वराष्ट्र के लिए जगें—जगें
स्वयं सजें वसुन्धरा संवार दे— २

हम उठे उठेगा जग हमारे संग साथियों
हम बढें तो सब बढेंगे अपने आप साथियों
जमीं पे आसमां को उतार दे — २
स्वयं सजें वसुन्धरा संवार दे — २

उदासियों को दूर कर खुशी को बांटते चले
गांव और शहर की दूरियों को पाटते चलें
ज्ञान को प्रचार दें प्रसार दें
स्वयं सजें वसुन्धरा संवार दे — २

समर्थ बाल वृध्द और नारियां रहें सदा
हरे भरे वनों की शाल ओढती रहे धरा
तरक्कियों की एक नई कतार दें — २
स्वयं सजें वसुन्धरा संवार दे — २

ये जाति धर्म बोलियां बने न शूल राह की
बढाएं बेल प्रेम की अखंडता की चाह की
भावना से ये चमन निखार दें
सद्भावना से ये चमन निखार दें— २
स्वयं सजें वसुन्धरा संवारा दें — २

उठे समाज के लिए उठें—उठें
जगें स्वराष्ट्र के लिए जगें—जगें
स्वयं सजें वसुन्धरा संवार दे — २